जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2455-[illegible]50

मूल्य ₹ 60

हंस

फरवरी 2025

पवन कुमार की ग़ज़ल

जमीं को नाप चुका आसमान बाकी है
अभी परिंदे के अंदर उड़ान बाकी है

बधाई तुमको कि पहुंचे तो इस बुलंदी पर
मगर ये ध्यान भी रखना ढलान बाकी है

मैं अपनी नींद से किस्तें चुकाऊंगा कब तक
तुम्हारी याद का कितना लगान बाकी है

मैं एक मोम का बुत हूं तू धूप का चेहरा
बचेगी किसकी अना इम्तिहान बाकी है

मुझे यकीन है हो जाऊंगा बरी इक दिन
मेरे बचाव में उसका बयान बाकी है

ये बात कह न दे सैलाब से कोई जाकर
तमाम शह्र में मेरा मकान बाकी है

अभी तो चुप हूं मगर दास्तां सुनाऊंगा
अभी तो मुंह में हमारे जबान बाकी है

संपर्क : डी-501, डीडीयू, सीजीआरसी अपार्टमेंट,
दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002
मो. 9412290079
ईमेल :singhsdm@gmail.com